INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(Trends of Change in Students' Educational Interest in the Context of National Curriculum Framework 2023: An Analytical Study)

विजय कुमार कठेरिया
(शोधार्थी),
अनुसंधानकेंद्र - ए.के.पी.जी. कॉलेज, शिकोहाबाद.
विश्वविद्यालय - डॉ.भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
आगरा (उत्तर प्रदेश, भारत)
E-mail: drkumarsir1111@gmail.com

डॉ. गीता यादव
सह-आचार्या (निर्देशिका),
अनुसंधानकेंद्र - ए.के.पी.जी. कॉलेज, शिकोहाबाद.
विश्वविद्यालय - डॉ.भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
आगरा (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2025-81434563/IRJHIS2507015

शोध सारांश :

यह अध्ययन नई शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के संदर्भ में विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। समग्र विकास, आलोचनात्मक सोच और लचीली शिक्षा प्रणाली पर केंद्रित ये नीतियाँ छात्रों की पसंद, जुड़ाव और प्रेरणा को प्रभावित कर रही हैं। विषयवस्तु विश्लेषण विधि से प्राप्त निष्कर्ष दर्शाते हैं कि बहु-विषयक और योग्यता-आधारित दृष्टिकोण विद्यार्थियों को आत्म-निर्देशित और सक्रिय सीखने की ओर प्रेरित करते हैं। जबकि, शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधनों की कमी और डिजिटल अवसंरचना जैसे कारक इन नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा बनते हैं। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए शैक्षिक अभिरुचि को बढ़ावा देने हेतु व्यावहारिक दिशा प्रदान करता है।

मूल शब्द: *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (एसीएफ 2023), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एईपी 2020), शैक्षिक अभिरुचि, विद्यार्थी, परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ, विश्लेषणात्मक अध्ययन, समग्र विकास, योग्यता-आधारित शिक्षा, लचीलापन।*

प्रस्तावना :

भारत की शिक्षा प्रणाली एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, जिसका उद्देश्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप एक अधिक समग्र, लचीली और शिक्षार्थी-केंद्रित प्रणाली का निर्माण करना है। इस परिवर्तन के केंद्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 जैसे प्रमुख नीतिगत दस्तावेज हैं। इन नीतियों का अंतिम लक्ष्य न केवल छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन में सुधार करना है, बल्कि उनकी शैक्षिक अभिरुचि को भी पोषित करना है, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक सार्थक और आनंददायक बन सके।शैक्षिक अभिरुचि एक जटिल मनोवैज्ञानिक अवधारणा है जो केवल क्षणिक जुड़ाव से कहीं अधिक है। मनोविज्ञान में, ***अभिरुचि "जुड़ाव की मनोवैज्ञानिक स्थिति और समय के साथ किसी विशेष सामग्री (जैसे,***

गणित) को फिर से जोड़ने की अपेक्षाकृत स्थायी प्रवृत्ति" दोनों को संदर्भित करती है (रेनिंजर एवं पॉज़ोस-ब्रूअर, 2015)। यह छात्रों के ध्यान, लक्ष्य निर्धारण और सीखने की रणनीतियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

राउंड्स (1995) और अन्य व्यावसायिक मनोविज्ञान परिप्रेक्ष्यों के अनुसार, ***अभिरुचि को "गतिविधियों, संदर्भों जिनमें गतिविधियाँ होती हैं, या पसंदीदा गतिविधियों से जुड़े परिणामों के लिए लक्षण-जैसी वरीयताओं" के रूप में परिभाषित किया जाता है जो लक्ष्य-उन्मुख व्यवहारों को प्रेरित करते हैं और व्यक्तियों को कुछ वातावरणों की ओर उन्मुख करते हैं।*** यह परिभाषा इस बात पर जोर देती है कि अभिरुचियाँ 'संदर्भित' होती हैं, जिसका अर्थ है कि उनका हमेशा एक 'वस्तु' होता है। व्यक्ति 'किसी चीज़ में' रुचि रखते हैं, जैसे कि एक विशिष्ट गतिविधि या एक शैक्षिक कार्यक्रम। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि नीतिगत हस्तक्षेपों का उद्देश्य इन वरीयताओं को पोषित करना और उनका लाभ उठाना होना चाहिए।अभिरुचियाँ प्रेरककार्य करती हैं; वे गतिविधियों और लक्ष्यों को विशिष्ट क्षेत्रकी ओर निर्देशित करती हैं, लक्ष्य-प्राप्ति के प्रयासों को ऊर्जा प्रदान करती हैं, और लक्ष्य प्राप्त होने तक दृढ़ता बनाए रखने में मदद करती हैं। ये शैक्षिक और कार्य सेटिंग्स में लक्ष्य प्राप्ति की भविष्यवाणी करती हैं। यह समझना कि अभिरुचि कैसे प्रेरणा, दृढ़ता और पसंद को प्रभावित करती है, यह विश्लेषण करने के लिए महत्वपूर्ण है कि एईपी 2020 औरएसीएफ 2023के लचीलेपन और बहु-विषयक दृष्टिकोण जैसे परिवर्तन छात्रों की अभिरुचि को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 का संक्षिप्त परिचय :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है, जो 34 साल पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का स्थान लेती है। यह "पहुंच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही" के मूलभूत स्तंभों पर आधारित है और भारत को एक जीवंत ज्ञान समाज और वैश्विक ज्ञान महाशक्ति में बदलने का लक्ष्य रखती है। एईपी 2020 का उद्देश्य रटने की बजाय वैचारिक समझ, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और नैतिक मूल्यों पर जोर देना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा विकसित एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो एईपी 2020 की आकांक्षाओं को दर्शाता है।एसीएफ 2023 का उद्देश्य स्कूल के माहौल, शिक्षाशास्त्र और संस्कृति के माध्यम से पाठ्यक्रम को बदलना है, जिससे छात्रों के लिए समग्र सीखने का अनुभव बेहतर हो सके। एईपी 2020 एक व्यापक नीतिगत दृष्टि प्रदान करता है, जबकि एसीएफ 2023 उस दृष्टि को पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन के लिए विशिष्ट दिशानिर्देशों में अनुवादित करता है। यह संबंध महत्वपूर्ण है क्योंकिएसीएफ 2023 ही वह तंत्र है जिसके माध्यम से एईपी 2020 के सिद्धांत छात्रों के सीखने के अनुभवऔर अंततः उनकी अभिरुचि को प्रभावित करेंगे।

शोध समस्या :

'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'

यह अध्ययन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के संदर्भ में विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में आ रहे परिवर्तनों की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करता है। नई शिक्षा नीति 2020 और एसीएफ 2023जैसे नीतिगत सुधार छात्रों के समग्र विकास, जुड़ाव और प्रेरणा को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। यह शोध इस बात की जांच करेगा कि क्या इन नीतियों के प्रभाव से छात्र अधिक सक्रिय, प्रेरित और लचीले ढंग से सीखने लगे हैं।

शोध प्रश्न :

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के प्रमुख सिद्धांत और प्रस्तावित परिवर्तन क्या हैं?
2. ये नीतिगत परिवर्तन विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि को किस प्रकार प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं?
3. शैक्षिक अभिरुचि में परिवर्तन की वर्तमान प्रवृत्तियाँ क्या हैं और इन नीतियों के संदर्भ में उनके क्या निहितार्थ हैं?
4. इन परिवर्तनों को प्रभावी ढंग से लागू करने में क्या चुनौतियाँ और अवसर हैं और शैक्षिक अभिरुचि को बढ़ावा देने के लिए क्या सुझाव दिए जा सकते हैं?

प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 - राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 एक दिशानिर्देशक दस्तावेज़ है जो नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को लागू करने के लिए स्कूलों में पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन प्रक्रियाओं के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसका उद्देश्य छात्र-केंद्रित, लचीली, बहुभाषिक और मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना है, जिससे छात्रों का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि- शैक्षिक अभिरुचिसे तात्पर्य उन झुकावों, पसंदों और मानसिक प्रवृत्तियों से है, जो किसी विद्यार्थी को अध्ययन, विषय-वस्तु या शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने और सीखने की प्रेरणा देती हैं। यह विद्यार्थियों की सीखने की शैली, रुचि के क्षेत्र और विषय चयन को प्रभावित करती है।
- परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ - परिवर्तन की प्रवृत्तियाँउन नियमित या उभरते हुए पैटर्न्स या रुझानों को दर्शाती हैं जो समय के साथ किसी विशेष क्षेत्र में देखे जाते हैं। शैक्षिक संदर्भ में, यह इंगित करता है कि विद्यार्थियों की अभिरुचियों, व्यवहारों या प्राथमिकताओं में किस प्रकार के बदलाव हो रहे हैं और उनका स्वरूप कैसा है।
- विश्लेषणात्मक अध्ययन - विश्लेषणात्मक अध्ययनवह शोध प्रक्रिया है जिसमें किसी विषय, घटना या समस्या के विभिन्न घटकों का गहन विश्लेषण कर उनकी प्रकृति, संबंध और प्रभाव को समझा जाता है यह अध्ययन मात्रात्मक या गुणात्मक दोनों रूपों में हो सकता है और इसका उद्देश्य किसी विषय की सूक्ष्मता से व्याख्या करना होता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के प्रमुख सिद्धांतों और प्रस्तावित परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
2. इन नीतिगत परिवर्तनों का विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि पर संभावित प्रभावों का मूल्यांकन करना।
3. उपलब्ध साहित्य के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में परिवर्तन की प्रवृत्तियों की पहचान करना।
4. नीति के सफल कार्यान्वयन और शैक्षिक अभिरुचि को बढ़ावा देने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पना :

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 द्वारा प्रस्तावित लचीलेपन, बहु-विषयक दृष्टिकोण और योग्यता-आधारित शिक्षा से विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में सकारात्मक परिवर्तन आने की संभावना है, जो उन्हें अधिक जुड़ाव और आत्म-निर्देशित सीखने की ओर ले जाएगा। यह परिकल्पना नीति के प्रमुख सिद्धांतों(लचीलापन, बहु-विषयक, योग्यता-आधारित) से निकलती है, जो सीधे छात्र अभिरुचि को लक्षित करते हैं। यह नीति के डिजाइन और शैक्षिक मनोविज्ञान के सिद्धांतों (जैसे, स्वायत्तता और रुचि के बीच संबंध) के बीच एक तार्किक संबंध बनाता है। परिकल्पना नीति के वांछित परिणामों को दर्शाती है और विश्लेषण को इन अपेक्षित परिवर्तनों को मान्य करने या खंडन करने की दिशा में निर्देशित करती है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन :

- **लिंगडोह ट्रोन और खारबिरिंबाई (2021) -** मेघालय के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में शैक्षिक अभिरुचि और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध का अध्ययन किया गया। परिणामों से पता चला कि लिंग के आधार पर अभिरुचि में अंतर था तथा मार्गदर्शन एवं परामर्श की आवश्यकता स्पष्ट रूप से प्रकट हुई।
- **झाओ और पेरेज़-फेल्कनर (2022) -** यह अध्ययन अमेरिका के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में विज्ञान और गणित विषयों में आत्म-धारणा बनाम अभिरुचि के दीर्घकालिक प्रभाव की जांच करता है। शोध से स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक स्तर पर उत्पन्न हुई रुचि, आगे STEM (विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित) में अध्ययन व करियर विकल्पों को प्रभावित करती है।

- **थॉमस और मोहम्मद (2024) -** यह अध्ययन ऑनलाइन माध्यम से गणित सीखने वाले माध्यमिक छात्रों की शैक्षिक अभिरुचि और प्रदर्शन के बीच संबंध पर केंद्रित है। शोध में यह पाया गया कि छात्रों कीरुचि एक महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक (पूर्व संकेतक) की भूमिका निभाती है।
- **अलई और ज़िवकल (2024)-** यह अध्ययन सोशल कॉग्निटिव करियर थ्योरी के अंतर्गत भौतिक विज्ञान की उप-शाखाओं में स्नातक छात्रों की गहरी रुचियों के विकास की प्रक्रिया को दर्शाता है। साक्षात्कार विश्लेषण से यह संकेत मिला कि कक्षा के अनुभव और प्रयोगात्मक अवसर रुचि के निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं।
- **लिंगडोह ट्रोन और खारबिरिंबाई (2021)-** मेघालय के माध्यमिक छात्रों में शैक्षणिक अभिरुचि और शैक्षिक उपलब्धियों के बीच संबंध का विश्लेषण किया गया। अध्ययन ने यहस्पष्ट किया कि लिंग-आधारित अंतर और करियर मार्गदर्शन की भूमिका छात्रों की अभिरुचि को प्रभावित करती है। यह शोध भारत जैसे विविध सामाजिक-सांस्कृतिक देश में शैक्षणिक नीति निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है।
- **माजी, मोरे, सुले एवं अन्य (2024)-** इस राष्ट्रीय सर्वेक्षण में भारतीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में खगोल विज्ञान शिक्षा के प्रति रुचि के स्तर का आकलन किया गया। अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और लिंग के आधार पर विविधता का विश्लेषण किया गया। निष्कर्षों में सामने आया कि भले ही छात्रों में प्रारंभिक उत्साह मौजूद है, लेकिन संसाधनों की कमी (जैसे—दूरबीन या तारामंडल) उनकी शैक्षिक अभिरुचि को बाधित करती है।

शोध का औचित्य :

यह अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में एसीएफ 2023 के प्रभाव को समझने हेतु महत्वपूर्ण है। पूर्व शोधों (लिंगडोह, 2021; झाओ, 2022; थॉमस, 2024) ने सिद्ध किया कि लिंग, मार्गदर्शन, आत्म-धारणा व कक्षा अनुभव रुचि निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। माजी (2024) के अनुसार संसाधनों की उपलब्धता भी अभिरुचि को प्रभावित करती है। ऐसे में यह विश्लेषण आवश्यक है कि नई नीतियाँ छात्रों की वास्तविक रुचियों को पोषित कर रही हैं या नहीं। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं व शिक्षकों को विद्यार्थियों की प्रेरणा एवं सहभागिता बढ़ाने हेतु प्रभावी दिशा प्रदान करेगा।

शोध प्रक्रिया :

यह गुणात्मक अध्ययन विषयवस्तु विश्लेषण विधि पर आधारित है, जिसमें एईपी 2020, एसीएफ 2023, शोध लेखों और आधिकारिक वेबसाइटों से प्राप्त द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण किया गया। शोध में नीति दस्तावेजों और अकादमिक सामग्री से प्रमुख अवधारणाएँ, प्रवृत्तियाँ और उनके छात्र अभिरुचि पर प्रभाव को कोडिंग और थीम विश्लेषण द्वारा समझा गया। यह विधि नीति के इरादों और व्यवहारिक प्रभावों के बीच संबंधस्पष्ट करती है और निष्कर्षों को साक्ष्य-आधारित रूप से प्रस्तुत करती है।

मुख्य विश्लेषण-

एनईपी 2020 और एनसीएफ 2023 के प्रमुख सिद्धांत और परिवर्तन:

एईपी 2020 औरएसीएफ 2023 भारत की शिक्षा प्रणाली में कई मौलिक परिवर्तन लाते हैं, जिनका उद्देश्य छात्रों के सीखने के अनुभव को बेहतर बनाना और उनकी शैक्षिक अभिरुचि को पोषित करना है।

1. संरचनात्मक परिवर्तन: एईपी 2020 ने पारंपरिक 10+2 संरचना को 5+3+3+4 पाठ्यचर्या संरचना से बदल दिया है, जो क्रमशः 3-8, 8-11, 11-14 और 14-18 वर्ष की आयु के अनुरूप है।

- **फाउंडेशनल स्टेज (3-8 वर्ष):** यह प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पर केंद्रित है, जिसमें खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और अनुभवात्मक सीखने पर जोर दिया गया है। इसका उद्देश्य संज्ञानात्मक, भाषाई, सामाजिक-भावनात्मक और शारीरिक कौशल का विकास करना है।
- **प्रिपरेटरी स्टेज (8-11 वर्ष):** यह मूलभूत सीखने पर आधारित है, जिसमें औपचारिक कक्षा सीखने की शुरुआत, भाषा, संख्यात्मकता और बुनियादी वैज्ञानिक अवधारणाओं के विकास पर जोर दिया गया है।

- **मिडिल स्टेज (11-14 वर्ष):** यह विषय-विशिष्ट सीखने और अंतःविषयक तरीकों के माध्यम से वैचारिक समझ और आलोचनात्मक सोच पर जोर देता है।
- **सेकेंडरी स्टेज (14-18 वर्ष):** यह उच्च शिक्षा और करियर के लिए विशेषज्ञता और तैयारी पर केंद्रित है। इसमें विषय विकल्पों में लचीलापन और परियोजना-आधारित सीखने पर जोर दिया गया है, जिसका उद्देश्य चुने हुए विषयों में उन्नत ज्ञान, करियर की तैयारी और जीवन कौशल का विकास करना है।

2. शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण: एसीएफ 2023 एक समग्र दृष्टिकोण पर जोर देता है, जिसका उद्देश्य स्कूल के माहौल, शिक्षाशास्त्र और संस्कृति के माध्यम से पाठ्यक्रम को बदलना है ताकि छात्रों के लिए समग्र सीखने का अनुभव बेहतर हो सके।

- **योग्यता-आधारित शिक्षा:** यह रटने की बजाय कौशल-आधारित, व्यावहारिक दृष्टिकोण पर जोर देता है, जिससे समस्या-समाधान क्षमताओं में वृद्धि होती है।
- **समग्र विकास:** छात्रों के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक पहलुओं केविकास पर जोर दिया गया है, जो उन्हें वास्तविक दुनिया के लिए तैयार करता है।
- **लचीलापन और बहु-विषयक:** छात्रों को विषयों में विकल्प प्रदान किया जाता है, अंतःविषयक अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाता है, और कला और विज्ञान के बीच कठोर अलगाव को हटा दिया गया है।
- **अनुभवात्मक शिक्षा:** अनुभवात्मक सीखने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है, जो छात्रों को वास्तविक दुनिया के अनुभवों के माध्यम से सीखने में मदद करता है।

3. मूल्यांकन सुधार एसीएफ 2023 ने बोर्ड परीक्षाओं और मूल्यांकन विधियों में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं।

- **उच्च-दांव वाली परीक्षाओं से निरंतर मूल्यांकन की ओर बदलाव:** यह योग्यता-आधारित मूल्यांकन पर जोर देता है
- **मॉड्यूलर बोर्ड परीक्षाओं की शुरूआत:** छात्र साल में दो बार बोर्ड परीक्षा दे सकते हैं, जिससे तनाव कम होता है और प्रदर्शन में सुधार होता है।
- **समग्र रिपोर्ट कार्ड:** मूल्यांकन केवल अंकों से परे कौशल, दक्षताओं और पाठ्येतर गतिविधियों को शामिल करेगा।

4. शिक्षक सशक्तिकरण और प्रौद्योगिकी एकीकरण:

- शिक्षक प्रशिक्षण और पेशेवर विकास पर जोर दिया गया है, क्योंकि शिक्षक इस नई प्रणाली को लागू करने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।
- डिजिटल उपकरणों, कृत्रिमबुद्धिमत्ताऔर ऑनलाइन सीखने के प्लेटफार्मों का शिक्षण और मूल्यांकन में एकीकरण किया जा रहा है।

एईपी 2020 और एसीएफ 2023 के प्रत्येक प्रमुख सिद्धांत और परिवर्तन का सीधा संबंध छात्रों की सीखने की अभिरुचि को बढ़ाने के लक्ष्य से है। उदाहरण के लिए, लचीलापन छात्रों को उनकी रुचियों के अनुरूप विषयों का चयन करने की अनुमति देता है, जिससे आंतरिक प्रेरणा बढ़ती है। बहु-विषयक दृष्टिकोण और अनुभवात्मक शिक्षा सीखने को अधिक प्रासंगिक और आकर्षक बनाती है। मूल्यांकन सुधार तनाव कम करते हैंऔर वास्तविक समझ पर जोर देते हैं, जिससे सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। यह खंड इन संबंधों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

तालिका 1: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के प्रमुख परिवर्तन

परिवर्तन का पहलू	NEP 2020 और NCF 2023 के तहत प्रमुख बिंदु
संरचनात्मक परिवर्तन	10+2 से 5+3+3+4 प्रणाली में बदलाव (फाउंडेशनल, प्रिपरेटरी, मिडिल, सेकेंडरी स्टेज)
शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण	योग्यता-आधारित शिक्षा, समग्र विकास, लचीलापन, बहु-विषयक और अनुभवात्मक शिक्षा पर जोर
मूल्यांकन सुधार	रटने से समझ की ओर बदलाव, मॉड्यूलर बोर्ड परीक्षा, समग्र रिपोर्ट कार्ड

शिक्षक सशक्तिकरण	व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण और पेशेवर विकास पर ध्यान
प्रौद्योगिकी एकीकरण	शिक्षण और सीखने में डिजिटल उपकरणों और AI का उपयोग
भाषा नीति	मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षा पर जोर, त्रि-भाषा सूत्र
भारतीय ज्ञान प्रणाली	पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणालियों और मूल्यों का एकीकरण

शैक्षिक अभिरुचि पर नीतिगत परिवर्तनों का संभावित प्रभाव :

एईपी 2020 और एसीएफ 2023 द्वारा प्रस्तावित परिवर्तन छात्रों की शैक्षिक अभिरुचि को कई तरीकों से प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं:

1. लचीलेपन और विषय चयन की स्वतंत्रता से अभिरुचि-आधारित सीखने को बढ़ावा: एईपी 2020 और एसीएफ 2023 छात्रों को विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला चुनने की अनुमति देकर पारंपरिक स्ट्रीम अलगाव को तोड़ते हैं। यह लचीलापन छात्रों को उनकी रुचियों, योग्यताओं और करियर लक्ष्यों के आधार पर अपनी शिक्षा को अनुकूलित करने में सक्षम बनाता है जिससे जुड़ाव, प्रेरणा और विषयों की गहरी समझ बढ़ सकती है। जब छात्रों को अपनी रुचियों के अनुरूप विषय चुनने की स्वतंत्रता होती है तो वे सीखने की प्रक्रिया में अधिक स्वामित्व महसूस करते हैं। यह स्वायत्तता, शैक्षिक मनोविज्ञान में, आंतरिक प्रेरणा और जुड़ाव के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। एईपी 2020 और एसीएफ 2023 द्वारा प्रदान किया गया लचीलापन छात्रों को अपनी अभिरुचि का पता लगाने और उनका पालन करने के लिए एक मंच प्रदान करता है, जिससे सीखने के अनुभव की गुणवत्ता में सुधार होता है।

2. बहु-विषयक और अनुभवात्मक शिक्षा से जुड़ाव और प्रेरणा में वृद्धि एईपी 2020 और एसीएफ 2023 बहु-विषयक और अनुभवात्मक सीखने पर जोर देते हैं, जिससे शिक्षा अधिक समग्र, प्रासंगिक और आकर्षक बनती है। यह दृष्टिकोण छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने और विभिन्न विषयों के बीच संबंध बनाने में मदद करता है, जिससे आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता बढ़ती है। पारंपरिक, विषय-केंद्रित शिक्षा अक्सर छात्रों को यह देखने में विफल रहती है कि विभिन्न विषय वास्तविक दुनिया में कैसे संबंधित हैं। बहुविषयक दृष्टिकोण छात्रों को विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों को एकीकृत करने और वास्तविक समस्याओं को हल करने की अनुमति देता है, जिससे सीखने का अनुभव अधिक सार्थक और आकर्षक हो जाता है। अनुभवात्मक शिक्षा, जैसे परियोजना-आधारित शिक्षा, छात्रों को सक्रिय रूप से भाग लेने और अवधारणाओं को सीधे लागू करने की अनुमति देती है, जिससे उनकी अभिरुचि और अवधारणाओं की समझ गहरी होती है।

3. योग्यता-आधारित मूल्यांकन से रटने की प्रवृत्ति में कमी और वास्तविक समझ पर जोर नई मूल्यांकन विधियां रटने पर जोर कम करती हैं और वैचारिक समझ, आलोचनात्मक सोच और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करती हैं। मॉड्यूलर बोर्ड परीक्षा और समग्र रिपोर्ट कार्ड छात्रों पर शैक्षणिक तनाव को कम करते हैं और सीखने के लिए एक अधिक सहायक वातावरण को बढ़ावा देते हैं। उच्च-दांव वाली, रटने पर आधारित परीक्षाएं अक्सर छात्रों में चिंता और भय पैदा करती हैं जिससे वे केवल परीक्षा पास करने के लिए पढ़ते हैं, न कि वास्तविक समझ के लिए। योग्यता-आधारित और मॉड्यूलर मूल्यांकन इस दबाव को कम करते हैं, जिससे छात्र सीखने की प्रक्रिया का अधिक आनंद ले पाते हैं और अपनी गलतियों से सीखने के लिए प्रेरित होते हैं। यह सीखने के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, जिससे उनकी शैक्षिक अभिरुचि बढ़ती है।

तालिका 2: शैक्षिक अभिरुचि पर नीतिगत परिवर्तनों के संभावित प्रभाव

एसीएफ 2023/ एईपी 2020 परिवर्तन	**शैक्षिक अभिरुचि पर अपेक्षित/अवलोकित प्रभाव**
लचीला विषय चयन	बढ़ी हुई प्रेरणा, आत्म-निर्देशित सीखने, विषय में गहरी रुचि, छात्र एजेंसी का पोषण
बहु-विषयक शिक्षा	सीखने की प्रासंगिकता में वृद्धि, आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता का विकास, विषयों के बीच संबंध स्थापित करना

अनुभवात्मक शिक्षा	सक्रिय जुड़ाव, वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के माध्यम से गहरी समझ, सीखने में आनंद
योग्यता-आधारित मूल्यांकन	रटने की प्रवृत्ति में कमी, शैक्षणिक तनाव में कमी, सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, वास्तविक समझ पर जोर
शिक्षक सशक्तिकरण	बेहतर शिक्षण विधियाँ, अधिक आकर्षक कक्षा वातावरण, छात्रों की आवश्यकताओं के प्रति अधिक प्रतिक्रिया
प्रौद्योगिकी एकीकरण	व्यक्तिगत सीखने के अनुभव, बढ़ी हुई पहुंच, सीखने की शैलियों के लिए अनुकूलन

विद्यार्थियों की अभिरुचि में परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ :

एईपी 2020 और एसीएफ 2023 के प्रारंभिक कार्यान्वयन के बाद छात्र जुड़ाव और शैक्षणिक रुचियों में लचीलेपन में सुधार के संकेत मिले हैं। एक अध्ययनमें पाया गया कि एईपी 2020 ने छात्रों की शैक्षणिक रुचियों में बेहतर वैचारिक समझ और अधिक लचीलेपन में "अत्यधिक महत्वपूर्ण सुधार" दिखाए हैं। छात्र बहु-विषयक दृष्टिकोण को पसंद करते हैं, हालांकि संस्थानों को इसे लागू करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। यह पहचानना कि प्रारंभिक साक्ष्य नीति के संभावित सकारात्मक प्रभावों की ओर इशारा करते हैं, लेकिन साथ ही यह भी स्वीकार करना कि कार्यान्वयन की चुनौतियाँ इन प्रभावों को धीमा कर सकती हैं या सीमित कर सकती हैं, एक महत्वपूर्ण उभरती प्रवृत्ति है।

नीति के वांछित परिणाम स्पष्ट हैं, लेकिन प्रारंभिक कार्यान्वयन डेटा वास्तविक दुनिया की जटिलताओं को दर्शाता है। से पता चलता है कि नीति में रुचि बढ़ाने की क्षमता है, लेकिन बताता है कि संस्थानों को नए दृष्टिकोणों को अपनाने में कठिनाई हो रही है। यह एक महत्वपूर्ण विरोधाभास है जो नीति के इरादों और जमीन पर उसके वास्तविक प्रभाव के बीच के अंतर को उजागर करता है। यह इंगित करता है कि छात्र अभिरुचि में वास्तविक परिवर्तन धीरे-धीरे हो सकते हैं और कार्यान्वयन की गुणवत्ता पर अत्यधिक निर्भर करेंगे।

लिंग, माता-पिता की शिक्षा और व्यवसाय जैसे कारकों का शैक्षिक अभिरुचि पर प्रभाव पूर्व अध्ययनों में देखा गया है। अध्ययनों से पता चला है कि लिंग का ललित कला, गृह विज्ञान, मानविकी और विज्ञान जैसे क्षेत्रों में शैक्षिक अभिरुचि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जिसमें महिला छात्रों की अभिरुचि पुरुष छात्रों की तुलना में अधिक होती है। कृषि, वाणिज्य और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखा गया। मातापिता की शिक्षा और व्यवसाय भी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक अभिरुचि को प्रभावित करते हैं। पूर्व शोध शैक्षिक अभिरुचि को प्रभावित करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों के अस्तित्व को स्थापित करते हैं। एसीएफ 2023 का "लचीलापन" और "विषय चयन की स्वतंत्रता" छात्रों को इन पारंपरिक अपेक्षाओं से परे विषयों का पता लगाने का अवसर प्रदान कर सकता है। यह एक कारणऔर-प्रभाव संबंधहै जहां नीतिगत परिवर्तन छात्रों को उन क्षेत्रों में रुचि विकसित करने के लिए सशक्त कर सकते हैं जो ऐतिहासिक रूप से उनके लिंग या पारिवारिक पृष्ठभूमि से जुड़े नहीं थेजिससे अभिरुचि पैटर्न में अधिक विविधता आ सकती है।

तालिका 3: शैक्षिक अभिरुचि को प्रभावित करने वाले कारक

कारक	**शैक्षिक अभिरुचि पर देखा गया प्रभाव (पूर्व-नीति)**	**एईपी/ एसीएफकार्यान्वयन के बाद उभरते रुझान**
लिंग	ललित कला, गृह विज्ञान, मानविकी, विज्ञान में महिला छात्रों की रुचि अधिक; कृषि, वाणिज्य, प्रौद्योगिकी में समान	NCF 2023 के लचीलेपन से पारंपरिक लिंग-आधारित विषय वरीयताओं को चुनौती मिलने की संभावना
माता-पिता की शिक्षा/व्यवसाय	माध्यमिक छात्रों की शैक्षिक अभिरुचि को प्रभावित करता है	नीतिगत लचीलेपन से सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बावजूद व्यापक विषय अन्वेषण को बढ़ावा मिल

		सकता है
शैक्षणिक मार्गदर्शन	गलत स्ट्रीम चयन से बचने और रुचि-संरेखित करियर पथ चुनने में महत्वपूर्ण	NEP/NCF में करियर मार्गदर्शन पर जोर छात्रों को बेहतर विकल्प चुनने में मदद कर सकता है
नीतिगत लचीलापन	छात्र जुड़ाव और शैक्षणिक रुचियों में लचीलेपन में महत्वपूर्ण सुधार	संस्थानों को बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाने में कठिनाई, जिससे वास्तविक अनुकूलन धीमा हो सकता है

चुनौतियाँ-

1. **संसाधनों की कमी** – कई स्कूलों में सुविधाएँ, उपकरण और धन सीमित हैं, जिससे अनुभवात्मक और डिजिटल शिक्षा बाधित होती है।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण** – नई नीतियों के अनुरूप शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता है; कई बार परिवर्तन का प्रतिरोध भी देखने को मिलता है।
3. **डिजिटल डिवाइड** – ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और तकनीकी संसाधनों की असमान पहुँच डिजिटल शिक्षा को सीमित करती है।
4. **असमान कार्यान्वयन** – राज्यों और संस्थानों में नीति का एक समान क्रियान्वयन सुनिश्चित करना कठिन है।
5. **रटने की प्रवृत्ति** – पारंपरिक रटने-आधारित पढ़ाई से हटकर नवाचार को अपनाना छात्रों और अभिभावकों के लिए चुनौतीपूर्ण है।
6. **मानसिक स्वास्थ्य दबाव** – प्रतिस्पर्धा और अंकों के तनाव से छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ सकती हैं।

अवसर-

1. **समावेशी शिक्षा** – नीति वंचित वर्गों को समान शैक्षिक अवसर देकर न्यायसंगत शिक्षा की दिशा में प्रयास करती है।
2. **21वीं सदी के कौशल** – आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमताओं को बढ़ावा देकर छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करती है।
3. **भारतीय ज्ञान परंपरा** – भारतीय मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत के एकीकरण से छात्रों में राष्ट्रीय गर्व की भावना विकसित होती है।
4. **जीवन भर सीखने की संस्कृति** – बहु-प्रवेश/निकास प्रणाली से छात्रों को लचीलापन और सतत् कौशल विकास के अवसर मिलते हैं।

तालिका 4: कार्यान्वयन चुनौतियाँ और छात्र अभिरुचि पर उनका प्रभाव

कार्यान्वयन चुनौती	**छात्र अभिरुचि पर संभावित नकारात्मक प्रभाव**
संसाधनों की कमी	अनुभवात्मक सीखने और डिजिटल एकीकरण के सीमित अवसर, जिससे जुड़ाव कम होता है।
अपर्याप्त शिक्षक प्रशिक्षण	नए शिक्षाशास्त्र को प्रभावी ढंग से लागू करने में असमर्थता, जिससे कक्षा में जुड़ाव कम होता है।
डिजिटल डिवाइड	ऑनलाइन संसाधनों तक असमान पहुंच, जिससे सीखने के अवसरों में असमानता और डिजिटल उपकरणों में रुचि में कमी
असंगत कार्यान्वयन	शिक्षा की गुणवत्ता और सीखने के अनुभवों में क्षेत्रीय असमानता, जिससे छात्रों की प्रेरणा प्रभावित होती है।
रटने की आदतों पर	नीति के बावजूद, छात्र वास्तविक समझ के बजाय परीक्षा पास करने के लिए पढ़ना जारी रखते हैं।

जोर	
मानसिक स्वास्थ्य दबाव	अत्यधिक प्रतिस्पर्धी माहौल और ग्रेड पर ध्यान केंद्रित करने से तनाव और सीखने में अरुचि बढ़ती है।

यह तालिका स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि यदि इन चुनौतियों का समाधान नहीं किया जाता है, तो वे नीति के सकारात्मक प्रभावों को छात्र अभिरुचि पर कैसे कमजोर कर सकती हैं। यह निष्कर्ष और सुझावों के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है, जो इन बाधाओं को दूर करने के लिए ठोस कदमों की सिफारिश करेगा।

निष्कर्ष :

यह विश्लेषणात्मक अध्ययन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि में परिवर्तन की प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास करता है। एईपी 2020 और एसीएफ 2023 में समाहित 5+3+3+4 संरचना, योग्यता-आधारित मूल्यांकन, अनुभवात्मक शिक्षा, लचीलापन और बहु-विषयक दृष्टिकोण जैसे नवाचार छात्रों की प्रेरणा और जुड़ाव को बढ़ाने की क्षमता रखते हैं। विषय चयन में लचीलापन और समग्र विकास की अवधारणा छात्रों को उनकी आंतरिक अभिरुचियों के अनुरूप सीखने का अवसर देती है। अनुभवात्मक और बहु-विषयक शिक्षण से सीखना अधिक प्रासंगिक और व्यावहारिक बनता है। हालांकि, प्रारंभिक साक्ष्य दर्शाते हैं कि नीति के इरादों और उनके वास्तविक प्रभावों में अंतर है, और संस्थागत स्तर पर इन परिवर्तनों को अपनाने में चुनौतियाँ मौजूद हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक कारक जैसे लिंग और पारिवारिक पृष्ठभूमि भी शैक्षिक अभिरुचि को प्रभावित करते हैं। संसाधनों की कमी, शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल असमानता जैसी समस्याएँ नीति की सफलता में बाधा बन सकती हैं। फिर भी, नीति शिक्षा को समावेशी, लचीली और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने का अवसर प्रदान करती है। निष्कर्षतः, छात्र अभिरुचि में सकारात्मक परिवर्तन के लिए नीतिगत इरादों के साथ-साथ ठोस कार्यान्वयन रणनीतियों की आवश्यकता है।

सुझाव -

नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु सुझाव:

1. **शिक्षक प्रशिक्षण**: शिक्षकों को NCF 2023 की शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन विधियों में प्रशिक्षित किया जाए।
2. **संसाधन वृद्धि** ग्रामीण क्षेत्रों में भी डिजिटल और अनुभवात्मक शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
3. **मूल्यांकन जागरूकता** योग्यता-आधारित मूल्यांकन की विधियों पर छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों को जागरूक किया जाए।
4. **मार्गदर्शन प्रणाली**: छात्रों के लिए रुचि आधारित करियर मार्गदर्शन सेवाएं सुलभ कराई जाएं।
5. **स्थानीय पाठ्यक्रम अनुकूलन**: पाठ्यक्रम को क्षेत्रीय भाषा व संदर्भ के अनुसार लचीला बनाया जाए।
6. **सहयोगात्मक पारिस्थितिकी**: अभिभावकों, समुदाय और उद्योगों के सहयोग से समग्र विकास हेतु वातावरण तैयार किया जाए।

भविष्य के शोध हेतु सुझाव:

1. **दीर्घकालिक अध्ययन**: NCF 2023 के प्रभावों पर विभिन्न वर्गों में दीर्घकालिक शोध हो।
2. **कार्यान्वयन बनाम अभिरुचि**: कार्यान्वयन की गुणवत्ता और छात्रों की अभिरुचि के संबंधों की जांच हो।
3. **शिक्षक प्रशिक्षण का मूल्यांकन**: प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता और छात्र सहभागिता पर उनके प्रभाव का विश्लेषण हो।
4. **सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव**: नीति किस हद तक लिंग-आधारित और पारंपरिक विषय चयन को प्रभावित करती है, इसका अध्ययन हो।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची :

1. लिंगडोह ट्रोन, सी., एवं खारबिरिंबाई, बी. बी. (2021). मेघालय, भारत के माध्यमिक विद्यालय छात्रों में शैक्षिक अभिरुचि और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध। ***जर्नल ऑफ़ एजुकेशन, कल्चर एंड सोसाइटी***, 12(1), 555–562. https://doi.org/10.15503/jecs2021.1.555.562
2. झाओ, टी., एवं पेरेज़ फेल्कनर, एल. (2022). अनुमानित क्षमताएं बनाम शैक्षणिक अभिरुचि? लिंग और नस्ल के आधार पर उच्च विद्यालय के विज्ञान एवं गणित का दीर्घकालिक प्रभाव। ***इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ STEM एजुकेशन***, 9, 42. https://doi.org/10.1186/s40594-022-00356-w
3. थॉमस, एल., एवं मोहम्मद, एल. ए. (2024). ऑनलाइन माध्यम से गणित सीखने वाले माध्यमिक छात्रों की शैक्षिक अभिरुचि और प्रदर्शन के बीच संबंध।***इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एकेडमिक रिसर्च इन प्रोग्रेसिव एजुकेशन एंड डेवलपमेंट***, 13(1), 2513–2523. https://hrmars.com/index.php/IJARPED/article/view/20943
4. अलई, डी. ज़ेड., एवं ज़्विकल, बी. एम. (2024). सामाजिक-संज्ञानात्मक करियर सिद्धांत के माध्यम से भौतिकी स्नातक छात्रों की उपक्षेत्रीय अभिरुचि का विकास [प्रीप्रिंट]। OSF. https://doi.org/10.31234/osf.io
5. जोशी, एम. (2015). माध्यमिक छात्रों में व्यावसायिक अभिरुचि पैटर्न में लिंग आधारित भिन्नताएँ। ***इंडियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च***, 39(1), 21–30.
6. सिंह, आर., एवं सिंह, ए. (2015). माध्यमिक छात्रों की शैक्षिक और व्यावसायिक अभिरुचियों का अभिभावकीय पृष्ठभूमि से संबंध।***जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड साइकोलॉजी***, 73(2), 45–52.
7. कुलश्रेष्ठ, एस. पी. (2007). ***एजुकेशनल इंटरेस्ट रिकॉर्ड का मैनुअल***। आगरा: नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन।
8. रेनिंगर, के. ए., एवं पॉज़ोस-ब्रूवर, आर. (2015). अभिरुचि, आत्म-परिकल्पना और अधिगम: अधिगम एवं विकास में अभिरुचि की भूमिका। ***एजुकेशनल साइकोलॉजिस्ट***, 50(3), 148–175. https://doi.org/10.1080/00461520.2015.1058726
9. माजी, एम., मोरे, एस., सुले, ए., बालासुब्रमण्यम, वी., भंडारी, ए., चंद, एच., … यादव, वी. (2024). भारत में खगोल विज्ञान शिक्षा की स्थिति: एक आधाररेखा सर्वेक्षण। ***arXiv प्रीप्रिंट***. https://doi.org/10.31219/osf.io
10. शिक्षा मंत्रालय (2020). ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020***. भारत सरकार।
11. एनसीईआरटी (2023). ***राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023***. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।
12. ब्लूम, बी. एस. (1956). ***टैक्सोनॉमी ऑफ़ एजुकेशनल ऑब्जेक्टिव्स: द क्लासिफिकेशन ऑफ़ एजुकेशनल गोल्स। हैंडबुक-I: कॉग्निटिव डोमेन***। लॉन्गमैन्स, ग्रीन।
13. बंडुरा, ए. (1986). ***सोशल फाउंडेशन्स ऑफ़ थॉट एंड एक्शन: अ सोशल कॉग्निटिव थ्योरी***। प्रेंटिस-हॉल।
14. वायगोत्स्की, एल. एस. (1978). ***माइंड इन सोसाइटी: द डेवलपमेंट ऑफ़ हायर साइकोलॉजिकल प्रोसेसेज़***। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
15. स्किनर, बी. एफ. (1953). ***साइंस एंड ह्यूमन बिहेवियर*** मैकमिलन।
16. पियाजे, जे. (1972). ***द साइकोलॉजी ऑफ़ द चाइल्ड***। बेसिक बुक्स।
17. रोजर्स, सी. आर. (1969). ***फ्रीडम टू लर्न***। मेरिल।
18. ओईसीडी (2022). ***21वीं सदी के कौशल और क्षमताएं छात्रों एवं शिक्षा प्रणालियों के लिए***। ओईसीडी पब्लिशिंग।
19. यूरेशिया रिव्यू (2023). ***भारत: पाठ्यक्रमों की लचीलापन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – ओपएड***। https://www.eurasiareview.com/13112023-india-flexibility-of-courses-and-nep-2020-oped/

20. राउंड्स, जे. (1995). ***व्यावसायिक अभिरुचियाँ: साहित्य की समीक्षा***। यूनिवर्सिटी ऑफ़ इलिनॉय, अर्बाना-शैंपेन। https://education.illinois.edu/docs/default-source/edpsy-documents/rounds-pub.pdf
21. अग्रवाल, जे. सी. (2020). ***एसेन्शियल्स ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी*** (संस्करण 2). विकास पब्लिशिंग हाउस।
22. मोहन, आर. (2022). ***इनोवेटिव करिकुलम डिज़ाइन एंड डेवलपमेंट***। पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।